॥ गोपी गीत ॥

गोप्य ऊचुः

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि ।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावका स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥१॥

ગોપીઓ કહેઃ

વિજયવાન છે વિશ્વમાં થયું, જનમિયા તમે તે થકી વ્રજ;
સતત ઈન્દિરાવાસ છે અહીં, સુખદ શ્રેષ્ઠ છે સર્વથી વ્રજ.
પણ નથી અમો નેજરી સુખ, પ્રિય અમે તમો નેજ શોધિયે.
પ્રિય તમે લઈ પ્રાણ ક્યાં ગયા? પ્રકટ થાવ સૌ, હાથ જોડિયે.

भावार्थः- हे प्रियतम प्यारे! तुम्हारे जन्म के कारण वैकुण्ठ आदि लोको से भी अधिक ब्रज की महिमा बढ गयी है, तभी तो सौन्दर्य और माधुर्य की देवी लक्ष्मी जी स्वर्ग छोड़कर यहाँ की सेवा के लिये नित्य निरन्तर यहाँ निवास करने लगी हैं। हे प्रियतम! देखो तुम्हारी गोपीयाँ जिन्होने तुम्हारे चरणों में ही अपने प्राण समर्पित कर रखे हैं, वन-वन मे भटककर तुम्हें ढूँढ़ रही हैं। (१)

The gopis said: O beloved, your birth in the land of Vraja has made it exceedingly glorious, and thus Indira, the goddess of fortune, always resides here. It is only for your sake that we, Your devoted servants, maintain our lives. We have been searching everywhere for You, so please show Yourself to us.

शरदुदाशये साधुजातसत्सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा ।सुरतनाथ
तेऽशुल्कदासिका वरद निघ्नतो नेह किं वधः ॥२॥

શરદ ઋતુના સરવરે ઉગ્યા, સરસ પદ્મથી દિવ્ય દ્રષ્ટિથી,
ઉર હણ્યા તમે, એ નથી વધ? પ્રભુ, અમે બધી શુદ્ર દાસિકા.

भावार्थः- हे हमारे प्रेम पूरित हृदय के स्वामी! हम तुम्हारे बिना मोल की दासी हैं, तुम शरद ऋतु के सुन्दर जलाशय में से चाँदनी की छटा के सौन्दर्य को चुराने वाले नेत्रों से हमें घायल कर चुके हो। हे प्रिय! अस्त्रों से हत्या करना ही वध होता है, क्या इन नेत्रों से मारना हमारा वध करना नहीं है। (२)

O master of our hearts, we are your priceless servants. O beloved, fulfiller of all our desires, Is it not slaughter on your part to strike us with the rays of your divine eyes which are more beautiful than the petals of a beautiful lotus in the clear autumn lake ?

विषजलाप्ययाद्व्यालराक्षसाद्वर्षमारुताद्वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद्विश्वतोभया दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ॥३॥

વિષય વારિથી ને અઘાસુર, પવન વૃષ્ટિ ને વીજ આગથી,
અસુર વ્યોમ ને વૃષલ બેય થી, બહુય રક્ષિયા હે પ્રભો! તમે.

भावार्थः- हे पुरुष शिरोमणि! यमुना जी के विषैले जल से होने वाली मृत्यु, अज़गर के रूप में खाने वाला अधासुर, इन्द्र की बर्षा, आकाशीय बिजली, आँधी रूप त्रिणावर्त, दावानल अग्नि, वृषभासुर और व्योमासुर आदि से अलग-अलग समय पर सब प्रकार भयों से तुमने बार-बार हमारी रक्षा की है। (३)

O Mighty One! from the destruction through the poisonous water of Yamuna [by the demon Agha in the guise of a Kaliya snake], from deluging rain and raging storms, from lightning and from demons Vrishabh and Vyom, time and again, you have protected us from various types of fears..

न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक् । विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान्सात्वतां कुले ॥४॥

સુત નથી યશોદા તણા તમે, સકળ સૃષ્ટિના પ્રાણનાથ છો;
જગત રક્ષવા બ્રહ્મ પ્રાર્થતા, યદુકુલે તમે જન્મ છે ધર્યો

भावार्थः- हे हमारे परम-सखा! तुम केवल यशोदा के पुत्र ही नहीं हो, तुम तो समस्त शरीर धारियों के हृदय में अन्तर्यामी रूप से रहने वाले साक्षी हो। हे सखा! ब्रह्मा जी की प्रार्थना से विश्व की रक्षा करने के लिये तुम यदुवंश में प्रकट हुए हो। (४)

You are not just the son of Yashoda. but you are inherent witness in all embodied beings. O eternal companion! In response to the prayer of Brahma, the creator of the universe, you have reincarnated among the yadu's to protect the world.

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते चरणमीयुषां संसृतेर्भयात् । करसरोरुहं कान्त कामदं शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ॥५॥

ભવ ભર્યે ભર્યા લોકને સદા, અભય આપતો હાથ આપનો.
કમળહાથ તે શ્રી કર ગ્રહ, અમ શિરે મુકો કામ કાપતો.

भावार्थः- हे यदुवंश शिरोमणि! तुम अपने प्रेमियों की अभिलाषा को पूर्ण करने में सबसे आगे रहते हो, जो लोग जन्म-मृत्यु रूप संसार के चक्कर से डरकर तुम्हारे चरणों की शरण ग्रहण करते हैं, उन्हे तुम्हारे करकमल अपनी छत्र छाया में लेकर अभय कर देते हैं। सबकी लालसा-अभिलाषा को पूर्ण करने वाला वही करकमल

जिससे तुमने लक्ष्मी जी का हाथ पकड़ा है। हे प्रिय! वही करकमल हमारे सिर पर रख दो। (५)

O the fulfiller of all desires! Whoever takes refuge in your lotus feet from the torments of samsara (materialistic world), they become fearless by your protection. O our beloved, the bestower of all boons, do lay your hands on our head.

व्रजजनार्तिहन्वीर योषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित ।
भज सखे भवत्किंकरीः स्म नो जलरुहाननं चारु दर्शय ॥६॥

વ્રજજનો તણાં કષ્ટ કાપતાં, સ્મિત થકી સદા ગર્વ ગાળતાં.
ચરણસેવિકા સૌ ખરે અમે, વદનપદ્મનું દાન દો તમે.

भावार्थ:- हे वीर शिरोमणि श्यामसुन्दर! तुम तो सभी ब्रजवासियों के दुखों को दूर करने वाले हो, तुम्हारी मन्द-मन्द मुस्कान की एक झलक ही तुम्हारे प्रेमीजनों के सारे मान मद को चूर-चूर कर देने के लिये पर्याप्त है। हे प्यारे सखा! हम से रूठो मत, प्रेम करो, हम तो तुम्हारी दासी हैं, तुम्हारे चरणों में निछावर हैं, हम अबलाओं को अपना वह परम सुन्दर साँवला मुखकमल दिखलाओ। (६)

O Destroyer of the miseries of the inhabitants of Vraja! Your mere smile is enough to shatter false pride of your love ones. O our beloved companion, graciously accept us, your servants. We are fully surrendered at your lotus feet. Show your most beautiful lotus like face to us.

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम् । फणिफणार्पितं ते पदांबुजं कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥७॥

પ્રણતલોકનાં પાપ ટાળતું, વનમહીં જતું શ્રીતણું ઘર,
ફણિફણા પરે મૂક્યુ જે તમે, ચરણ વિશ્વના એક હે વર!
અમ ઉરપ્રદે શે મૂકો હવે, હૃદય તાપ કે શાંત સૌ બને.

भावार्थ:- तुम्हारे चरणकमल शरणागत प्राणीयों के सारे पापों को नष्ट कर देते हैं, लक्ष्मीजी सौन्दर्य और माधुर्य की खान हैं, वह जिन चरणों को अपनी गोद में रखकर निहारा करती हैं, वह कोमल चरण बछड़ों के पीछे-पीछे चल रहे हैं, उन्ही चरणों को तुमने कालियानाग के शीश पर धारण किया था, तुम्हारी विरह की वेदना से हृदय संतप्त हो रहा है, तुमसे मिलन की कामना हमें सता रही है। हे प्रियतम! तुम उन शीतलता प्रदान करने वाले चरणों को हमारे जलते हुए वक्ष:स्थल पर रखकर हमारे हृदय की आग्नि को शान्त कर दो। (७)

Your lotus-feet destroy the sins of those who submit to you - the lotus feet that follow the foot steps of grazing cows, and which are coveted by the goddess of Fortune, and which gracefully danced on the hood of Kaliya Snake. O Lord, please put your lotus feet on our chest(heart) to soothe our burning desire and rid us of the sorrows lurking in our hearts.

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण । विधिकरीरिमा वीर मुह्यतीरधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः ॥८॥

મધુરવાણીથી મોહ પામતાં, બુધજનોય હે પદ્મલોચન!
મધુરવાણીથી મોહ પામતી, બહુ પ્રભો, અમે ગોપીકા વન.
પ્રણયની સુધા પાવ પ્રેમથી, હૃદય દાન દો સૃષ્ટિના ધન!

भावार्थ:- हे कमलनयन! तुम्हारी वाणी कितनी मधुर है, तुम्हारा एक-एक शब्द हमारे लिये अमृत से बढ़कर मधुर हैं, बड़े-बड़े विद्वान तुम्हारी वाणी से मोहित होकर अपना सर्वस्व निछावर कर देते हैं। उसी वाणी का रसास्वादन करके तुम्हारी आज्ञाकारिणी हम दासी मोहित हो रहीं है। हे दानवीर! अब तुम अपना दिव्य अमृत से भी मधुर अधर-रस पिलाकर हमें जीवन दान दो। (८)

O Lotus-eyed One! Your speech is so sweet. Every single word, every little sound, every single letter is very charming. Even the most wise and learned get engrossed in it and sacrifice everything for it. After tasting the nectar of the sound of your voice, your faithful Gopis are falling in love. Now give us the gift of life with the divine nectar from your lips..

तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम् । श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ॥९॥

મધુ કથાસુધા તપ્ત જીવને, પરમશાંતિને આપનાર છે.
કવિથકી ઘણી છે ગવાયેલી, વિપદ પાપથી તારનાર છે.
સુખદ ચારુ ને ગૂઢ છે ઘણી, શ્રવણથી સદા શ્રેય આપતી.
તવ કથાસુધા પાન જે કરે, પરમદાન તે વિશ્વને કરે.

भावार्थ:- हे हमारे स्वामी! तुम्हारी कथा अमृत स्वरूप हैं, जो विरह से पीड़ित लोगों के लिये तो वह जीवन को शीतलता प्रदान करने वाली हैं, ज्ञानीयों, महात्माओं, भक्त कवियों ने तुम्हारी लीलाओं का गुणगान किया है, जो सारे पाप-ताप को मिटाने वाली है। जिसके सुनने मात्र से परम-मंगल एवं परम-कल्याण का दान देने वाली है, तुम्हारी लीला-कथा परम-सुन्दर, परम-मधुर और कभी न समाप्त होने वाली हैं, जो तुम्हारी लीला का गान करते हैं, वह लोग वास्तव में मत्यु-लोक में सबसे बड़े दानी हैं। (९)

The nectar of Your words and the descriptions of Your activities are the life and soul of those suffering in this material world. These narrations, transmitted by learned sages, eradicate one's sinful reactions and bestow good fortune upon whoever hears them. By mere listening to them removes all sins and sufferings and bestows the supreme bliss and welfare as well. Certainly, those who spread the message of Godhead are most munificent.

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम् ।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ॥१०॥

પરમ હાસ્ય ને દ્રષ્ટિપાત ને, તુજ વિહાર સૌ ધ્યાન મંગલ
સુખદ શબ્દ એ કાંત કાળના, હૃદય સ્પર્શતા નંદનંદન!
સ્મરણથી જ તે દુઃખ આપતાં, કપટમિત્ર હે, એકલા થતાં.

भावार्थ:- हे हमारे प्यारे! एक दिन वह था, तुम्हारी प्रेम हँसी और चितवन तथा तुम्हारी विभिन्न प्रकार की क्रीड़ाओं का ध्यान करके हम आनन्द में मग्न हो जाया करतीं थी। हे हमारे कपटी मित्र! उन सब का ध्यान करना भी मंगलदायक है, उसके बाद तुमने एकान्त में हृदयस्पर्शी ठिठोलियाँ की और प्रेम की बातें की, अब वह सब बातें याद आकर हमारे मन को क्षुब्ध कर रही हैं। (१०)

Your smiles, Your sweet, loving glances, the intimate pastimes and confidential talks we enjoyed with You—all these are auspicious to meditate upon, and they touch our hearts. But at the same time, O deceiver, they very much agitate our minds.

चलसि यद्व्रजाच्चारयन्पशून् नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम् ।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति ॥११॥

પશુ લઈ તમે જાવ ચારવા, વ્રજ થકી વને ગાય પાળવા,
કમળથીય છે પાય કોમળા, નિરખતાં ખરે થાય છે વ્યથા.
તણખલાં વળી કષ્ટ આપશે, સહન દુઃખ એ શેં કરી થશે?
કઠિન ભૂમિનો સ્પર્શ શેં થશે? કઠિન ભૂમિનો સ્પર્શ શેં થશે?

भावार्थः- हमारे प्यारे स्वामी! तुम्हारे चरण कमल से भी कोमल और सुन्दर हैं, जब तुम गौओं को चराने के लिये ब्रज से निकलते हो तब यह सोचकर कि तुम्हारे युगल चरण कंकड़, तिनके, घास, और काँटे चुभने से कष्ट पाते होंगे तो हमारा मन बहुत वेचैन हो जाता है। (११)

O beloved master, your feet are more tender and beautiful than a Lotus. When you take the cows for grazing, our hearts become restless at the very thought of your feet being pricked by the spiked husks of grain and the rough grass and plants. It is indeed painful for us.

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलैर्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम् ।
घनरजस्वलं दर्शयन्मुहुर्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ॥१२॥

દિન પૂરો થતાં ગૌ લઈ ફરો, મધુરકેશ હે, ચિત્તને હરો;
રજ છવાયેલી પદ્મશા મુખે, નિરખિયે અમે દ્રશ્ય તે સમે,
હૃદયમાં થતો પ્રેમ તે સમે, મિલન માગતાં વીર હે અમે.

भावार्थः- हे हमारे वीर प्रियतम! दिन ढलने पर जब तुम वन से घर लौटते हो तो हम देखतीं हैं, कि तुम्हारे मुखकमल पर नीली-नीली अलकें लटक रहीं है और गौओं के खुर से उड़-उड़कर घनी धूल पड़ी हुई है। तुम अपना वह मनोहारी सौन्दर्य हमें दिखाकर हमारे हृदय को प्रेम-पूरित करके मिलन की कामना उत्पन्न करते हो। (१२)

At the end of the day, when you return from the forest, we see your beautiful lotus face covered with dark curly locks and covered with dust. Our beloved, when You repeatedly show us Your lotus face, You arouse lusty desires in our minds.

प्रणतकामदं पद्मजार्चितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि । चरणपङ्कजं शंतमं च ते रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ॥१३॥

સતત સેવતાં દિવ્ય ભક્તની, સકલ કામના પૂર્ણ જે કરે.
ચરણ પદ્મજા પૂજ્ય તે ખરે, ભૂષણ ભૂમિના કષ્ટને હરે.
ચરણ તે તમે પ્રેમથી સદા, ઉર પરે મૂકો તાપ કે ટળે.

भावार्थः- हे प्रियतम! तुम ही हमारे सारे दुखों को मिटाने वाले हो, तुम्हारे चरणकमल शरणागत भक्तों की समस्त अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाली हैं, इन चरणों के ध्यान करने मात्र से सभी ब्याधायें शान्त हो जाती हैं। हे प्यारे! तुम अपने उन परम-कल्याण स्वरूप चरणकमल हमारे वक्षःस्थल पर रखकर हमारे हृदय की व्यथा को शान्त कर दो। (१३)

Your lotus feet, which are worshiped by Lord Brahma, fulfill the desires of all who bow down to them. They are the jewels of this universe, In times of difficulty, they are appropriate object of meditation, by which all sufferings are removed. O the resident of Kunj ! Please put your pious lotus feet on our chest (heart) to bless and give peace to confer supreme beatitude and peace to us.

सुरतवर्धनं शोकनाशनं स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।
इतररागविस्मारणं नृणां वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ॥१४॥

મિલન આશને જે વધારતી, સ્વરિત વેણુથી છે ચુમાયલી
ઈતર રાગ સૌ નેભૂલાવતી, ક્ષણિક સ્વાદથી સ્વર્ગ આપતી,
પરમ પાવ તે ખૂબ પ્રેમથી, પ્રણયની સુધા ક્લેષ કાપતી.

भावार्थः- हे वीर शिरोमणि! आपका अधरामृत तुम्हारे स्मरण को बढ़ाने वाला है, सभी शोक-सन्ताप को नष्ट करने वाला है, यह बाँसुरी तुम्हारे होठों से चुम्बित होकर तुम्हारा गुणगान करने लगती है। जिन्होने इस अधरामृत को एक बार भी पी लिया तो उन लोगों को अन्य किसी से आसक्तियों का स्मरण नहीं रहता है, तुम अपना वही अधरामृत हम सभी को वितरित कर दो। (१४)

O our hero, Fill us with your enchanting music which drop like ambrosia from the flute kissed by your lips and the pitch, which heightens our spiritual ecstasy, dispel our sorrows and make us oblivious to every other allurement. Your sweet music is divinely intoxicating.

अटति यद्भवानह्नि काननं त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम् ।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद्दृशाम् ॥१५॥

વનમહીં તમે જાવ તે સમે, યુગસમી ક્ષણો દીસતી ખરે;
વદન કેશથી યુક્ત દેખતાં, દિન પૂરો થતાં શાંતિ શી મળે,
પણ થતું સદા ચિત્તમાં ફરી, મુરખ પાપણો જેહણે કરી.

भावार्थः- हे हमारे प्यारे! दिन के समय तुम वन में विहार करने चले जाते हो, तब तुम्हें देखे बिना हमारे लिये एक क्षण भी एक युग के समान हो जाता है, और तुम संध्या के समय लौटते हो तथा घुंघराली अलकावली से युक्त तुम्हारे सुन्दर मुखारविन्द को हम देखती हैं, उस समय हमारी पलकों का गिरना हमारे लिये अत्यन्त कष्टकारी होता है, तब ऎसा महसूस होता है कि इन पलकों को बनाने वाला विधाता मूर्ख है। (१५)

O our beloved, during the day, when you go off to the forest, every moment (without seeing you) passes like a yug (age). When you return in the evening and we eagerly look upon your most beautiful face framed with curly locks, our pleasure is hindered by our eyelids. At that time, we feel that the creator of eyelids made it without reason.

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवानतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः ।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि ॥१६॥

પતિ તજી તજી બંધુ ભ્રાતને, સ્વજનો સૌ અમે આવિયાં અહીં
મધુરગાનથી મોહ પામતાં, ઘર તજી અમે આવિયાં અહીં
તુજ વિના તજે કોણ નારને, મધુર રાતમાં પ્રેમસારને?

भावार्थः- हे हमारे प्यारे श्यामसुन्दर! हम अपने पति, पुत्र, सभी भाई-बन्धु और कुल परिवार को त्यागकर उनकी इच्छा और आज्ञाओं का उल्लंघन करके तुम्हारे पास आयी हैं। हम तुम्हारी हर चाल को जानती हैं, हर संकेत को समझती हैं और

तुम्हारे मधुर गान से मोहित होकर यहाँ आयी हैं। हे कपटी! इसप्रकार रात्रि को आयी हुई युवतियों को तुम्हारे अलावा और कौन छोड़ सकता है। (१६)

Dear Achyuta, You know very well why we have come here. We have disobeyed and disowned our own relatives, husband, son, brother and our family just to have a glimpse of You. Who, but a cheater like You, would abandon young women like us, who come to see You in the middle of the night, captured by the melodious music of Your flute?

रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम् । बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः ॥१७॥

પ્રણયવાતથી પ્રેમ થાય છે, વદનના સ્મિતે પ્રાણ ન્હાય છે.
નયન શ્રી તણાં ધામ શું મહા, ઉર નિહાળતાં શાંતિ થાય છે.
મધુર રૂપ તે યાદ આવતાં, મિલન ચારૂ આ ચિત્ત ચ્હાય છે.

भावार्थ:- हे प्यारे! एकान्त में तुम मिलन की इच्छा और प्रेमभाव जगाने वाली बातें किया करते थे, हँसी-मजाक करके हमें छेड़ते थे, तुम प्रेम भरी चितवन से हमारी ओर देखकर मुस्करा देते थे। तुम्हारा विशाल वक्षःस्थल, जिस पर लक्ष्मीजी नित्य निवास करती हैं। हे प्रिय! तब से अब तक निरन्तर हमारी लालसा बढ़ती ही जा रही है और हमारा मन तुम्हारे प्रति अत्यधिक आसक्त होता जा रहा है। (१७)

Our minds are repeatedly bewildered as we think of the intimate conversations we had with You in secret, feel the rise of lust in our hearts and remember Your smiling face, Your loving glances and Your broad chest, the resting place of the goddess of fortune. Thus we experience the most severe hankering for You.

व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम् । त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम् ॥१८॥

સકળ વિશ્વ ને વ્રજજનો તણી, વિપદ ટાળવા જન્મિયા તમે,
સ્મૃતિ નથી રહી એ વિચારની, હ્રજુય ગુપ્ત તો કાંરહ્યા તમે?
પ્રણયપ્રાણની કેં દવા કરો, નિજજનો તણાં દરદને હરો.

भावार्थ:- हे प्यारे! तुम्हारी यह अभिव्यक्ति ब्रज-वनवासियों के सम्पूर्ण दुख-ताप को नष्ट करने वाली और विश्व का पूर्ण मंगल करने के लिये है। हमारा हृदय तुम्हारे प्रति लालसा से भर रहा है, कुछ ऎसी औषधि प्रदान करो जो तुम्हारे भक्तजनों के हृदय-रोग को सदा-सदा के लिये मिटा दे। (१८)
O beloved, Your all-auspicious manifestation is for the removal of sorrows of residents of Vraja and for the well being of the entire universe. Our heart and mind long for your heavenly association. Please bless us with some remedy that will put an end to the pain in our heart.

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेष भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु । तेनाटवीमटसि तद्व्यथते न किंस्वित् कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥१९॥

છે કોમળાં કમળથી ચરણો તમારાં, બ્હિતા કઠોર હૃદયે મુકિયે અમારાં;
તેવાં લઈ ચરણ આ વનમાં ફરો છો, રાતે ખરે હૃદય શોક થકી ભરો છો;
કાંટા અને સખત કંકર કેંક વાગે, એવા વિચાર કરતાં અતિદુઃખ જાગે.
અર્પ્યું અમે હૃદય હે પ્રભુજી તમોને, તો શીઘ્ર દર્શન હવે પ્રિય દો અમોને.

भावार्थ:- हे श्रीकृष्ण! तुम्हारे चरण कमल से भी कोमल हैं, उन्हे हम अपने कठोर स्तनों पर भी डरते-डरते बहुत धीरे से रखती हैं, जिससे आपके कोमल चरणों में कहीं चोट न लग जाये, उन्हीं चरणों से तुम रात्रि के समय घोर जंगल में छिपे हुए भटक रहे हो, क्या कंकण, पत्थर, काँटे आदि की चोट लगने से आपके चरणों मे पीड़ा नहीं होती? हमें तो इसकी कल्पना मात्र से ही अचेत होती जा रही हैं। हे प्यारे श्यामसुन्दर! हे हमारे प्राणनाथ! हमारा जीवन तुम्हारे लिये है, हम तुम्हारे लिये ही जी रहीं है, हम सिर्फ तुम्हारी ही हैं। (१९)

O dearly beloved! As your feet are more tender than a lotus, we use utmost caution while putting them on our chest(heart). With same tender feet you wander in the deep forest bare feet. The mere thought of you treading with those tender feet on the thorny, stony paths in the forest give us pain and we loose our wits. O Lord, our existence is only for you. We are only living for you. We are only yours!!

इति श्रीमद्भागवत महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडायां गोपीगीतं नामैकत्रिंशोऽध्यायः ॥

॥ શ્રી યોગેશ્વર કૃત ગોપીગીત સમાપ્ત ॥

बसतीदेवी श्रीवल्लभ व्यास के

जय श्री कृष्णा ।।

Download link for mp4 VIDEO of this gopi geet:
http://santoshvyas.webs.com/apps/videos/videos/show/17600739-gopi-geet-m4v-gopi-geet-in-gujarati-ashit-hema-desai-